श्रीकथाङ्क (कल्याण-गीताप्रेस)

वेदविद्या—विदेशोंमें

(डॉ० श्रीराजेन्द्ररंजनजी चतुर्वेदी, डी०लिट्०)

शोपेन हावर, मैक्समूलर, हेनरिक जिमर, हर्मन ओल्डेनवर्ग, अल्फ्रेड हिलब्रांट, के० एफ० गेल्डनर, हरमैन लौमेस, हरमैन बरमर, हरमैन ग्रासमैन, अल्फ्रैड लुडविग, वाल्टरवुस्ट, स्कर्ट, पालड्यूसेन आदि जर्मन विद्वानोंकी सुदीर्घ परम्परा है, जिन्होंने वेदविद्याके अध्ययनकी महत्ता प्रतिपादित की। सन् १८४६ में मैक्समूलरने आचार्य सायणके भाष्यसहित सम्पूर्ण ऋग्वेद-संहिताका सम्पादन कर उसे प्रकाशित किया था। इस दिशामें मैक्समूलरको प्रेरित करनेवाले फ्रांसीसी विद्वान् थे यूजीन बर्नाफ।

रूडोल्फ फोन रॉथकी कृति 'वेदोंके साहित्य और इतिहासके विषयमें' मैक्समूलरसे तीन वर्ष पहले ही आ चुकी थी। रॉथके शिष्योंमें कार्ल एफ गेल्डनर (सन् १८५२—१९२९)-ने ऋग्वेदका अनुवाद किया था। बादमें इसका अनुवाद अल्फ्रेड लुडविग (सन् १८३२—१९११)-ने प्रकाशित कराया।

जर्मनीमें सबसे पहले सामवेदका सम्पादन और अनुवाद किया गया था। थिओडेर बेन्फे (सन् १८०९—१८८१)-ने सन् १८४८ में उसका प्रकाशन किया था। अल्ब्रेरल बेवरने शुक्लयजुर्वेदका मूल पाठ (सन् १८५२—१९५९ के बीच) प्रकाशित कराया था। लीओपोल्ड श्रोएडेर (सन् १८५१—१९२०)-ने (सन् १८८१—१८८६ में) मैत्रायणी-संहिताका सम्पादन किया। यूलियुस गिल (सन् १८४०—१९१८)-ने

अथर्ववेदके सौ मन्त्रोंका अनुवाद किया।

अल्फ्रेड हिलब्रांट (सन् १८५३—१९२७)-ने दो खण्डोंमें 'वैदिक-पुराण-कथा' नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किया। हर्मन ओल्डेनवर्ग (सन् १८५४—१९२०)-ने वेदोंके धर्मपर एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थकी रचना की थी और ऋग्वेदपर जो व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ लिखीं, वैदिक अध्ययनके क्षेत्रमें उन्हें महत्त्वपूर्ण माना जाता है। हेनरिक जिमरने 'प्राचीन भारतमें जीवन' नामक ग्रन्थ लिखा, जिसमें वैदिक भारतके सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्षोंका चित्रण है।

मैक्समूलर वेदविद्याके अनुसंधानद्वारा भारतवर्षके उस स्वरूपको पहचान सके थे, जिसके सम्बन्धमें उन्होंने लिखा है कि 'यदि मुझसे पूछा जाय कि सम्पूर्ण मानव-समाजमें सबसे अधिक बौद्धिक विकास कहाँ हुआ? कहाँ सबसे बड़ी जटिल समस्याओंपर विचार हुआ? तो मैं भारतवर्षकी ओर संकेत करूँगा। यदि मुझसे यह पूछा जाय कि वह कौन-सा साहित्य है, जो हमारे आन्तरिक जीवनको पूर्ण और सार्वभौम बना सकता है तो मैं वैदिक साहित्यकी ओर संकेत करूँगा।' हेनरिक जिमरने (सन् १८७९ में) 'ऐंसियेंट लाइफ—द कल्चर ऑफ द वैदिक आर्यन्स' प्रकाशित किया था। स्कर्टने अथर्ववेदका अनुवाद सन् १९२३ में प्रकाशित किया। पालड्यूसेनने सन् १९०७ में 'द सीक्रेट टीचिंग ऑफ द वेद' और सन् १८८३ में 'द सिस्टम ऑफ वेद' प्रकाशित किया था।

ओवस्यानिको कुलिकोव्स्की एक रूसी विद्वान् थे, जिन्होंने (सन् १८८४) सोम-उपासनापर कार्य किया था। वे पहले रूसी विद्वान् थे, जिन्होंने वेदके मिथकों एवं दर्शनशास्त्रका अध्ययन किया और भारतीय सभ्यताके विकासका एकल सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उन्होंने पी-एच्०डी०के लिये 'वेदकालीन भारतमें अग्निपूजा' विषयपर अनुसंधान किया, वैदिक अनुष्ठानों और अन्य जातियोंके अनुष्ठानोंमें अनेक समानताओंका उल्लेख किया तथा भारतीय एवं यूरोपीय जातियोंकी संस्कृतियोंके मूल उद्गमोंको खोजा।

वैदिक उपाख्यानोंपर रूसी विद्वान् ब्लादीमिर तोपोरोवकी कृति, ग्रिगोरी इलिनकी वैदिक संस्कृतिके भौतिक आधारोंकी खोज और ग्रिगोरी वोन्गार्ड लेविनकी वैदिक दर्शन-विषयक कृतियाँ उच्च अकादमिक स्वरकी हैं। लेनिनग्राद राज्यविश्वविद्यालयके प्रोफेसर ब्लादीमिर एमनिने 'वैदिक साहित्यके इतिहास-सम्बन्धी निबन्ध' नामक कृति प्रकाशित की है। पुस्तकके प्रारम्भमें वे लिखते हैं कि भारतमें अतीत और वर्तमानके अटूट सम्बन्ध तथा इसकी प्राचीन संस्कृतिके विचार आदर्श जनताकी चेतनामें आज भी जीवित हैं और समाजके आत्मिक जीवनको प्रभावित करते हैं। ब्लादीमिर तिखोमिरोवने 'सुनो पृथ्वी, सुनो आकाश' नामक कृतिमें ऋग्वेद और अथर्ववेदके पद्योंका रूसी भाषामें अनुवाद किया है।

तात्याना येलिजारेन्कोवाने रूसी भाषामें ऋग्वेदका सम्पादन-प्रकाशन किया है। वे ऋग्वेदके मिथक शास्त्र एवं वरुण आदि देवी-देवताओंकी छबिपर अनेक निबन्ध प्रकाशित करा चुकी हैं। येलिजारेन्कोवाद्वारा प्रकाशित ऋग्वेदके अनुवादका पहला खण्ड मास्को तथा लेनिनग्रादमें हाथों-हाथ बिक गया था, उसकी चालीस हजार प्रतियाँ छापी गयी थीं।

इसी भारी माँगके कारणोंपर प्रकाश डालते हुए येलिजारेन्कोवाने कहा कि 'हमें वैदिक साहित्यकी आवश्यकता इसलिये है कि उसका हमारे जनगणके इतिहाससे सम्बन्ध है।' उन्होंने काला सागर क्षेत्र-स्थित स्थानों और नदियोंके नामोंमें, काकेशससे प्राप्त रथोंके आलेखोंमें तथा मध्य एशियाके पवित्र पात्रोंमें वैदिक कालके अवशेष चिह्नित किये हैं। रूसी पुरातत्त्वविज्ञानी इस आशासे वैदिक पाठोंका अध्ययन कर रहे हैं कि उनके सहारे वे धरतीमें समायी हुई प्राचीन सभ्यताके इंडोआर्यन मिथक शास्त्रीय एवं आनुष्ठानिक पैटर्नको खोज पानेमें सफल हों। डॉ० वासिल्कोवके अनुसार 'ऋग्वेद वास्तवमें भारतीय संस्कृतिकी महान् शुरुआत है, इतिवृत्तात्मक दृष्टिसे इसका प्राचीनतम स्मारक है, जिसमें धर्म एवं दर्शनशास्त्रके क्षेत्रमें विकासके अपेक्षाकृत ऊँचे चरणका तथा आध्यात्मिक पराकाष्ठाका उल्लेख मिलता है। इसके साथ ही इसमें स्लावजनके साथ-साथ सेल्ट, ग्रीक, जर्मन तथा अन्य इंडोयूरोपीय जातियोंकी संस्कृतिकी प्राचीन आधार-शिलाओंके साथ सादृश्य भी दिखायी पड़ता है।'